N.Nosov
निकोलाई नोसोव
The Pistol
पिस्तौल
चित्र: ए. केनेव्स्की
हिंदी: अरविन्द गुप्ता
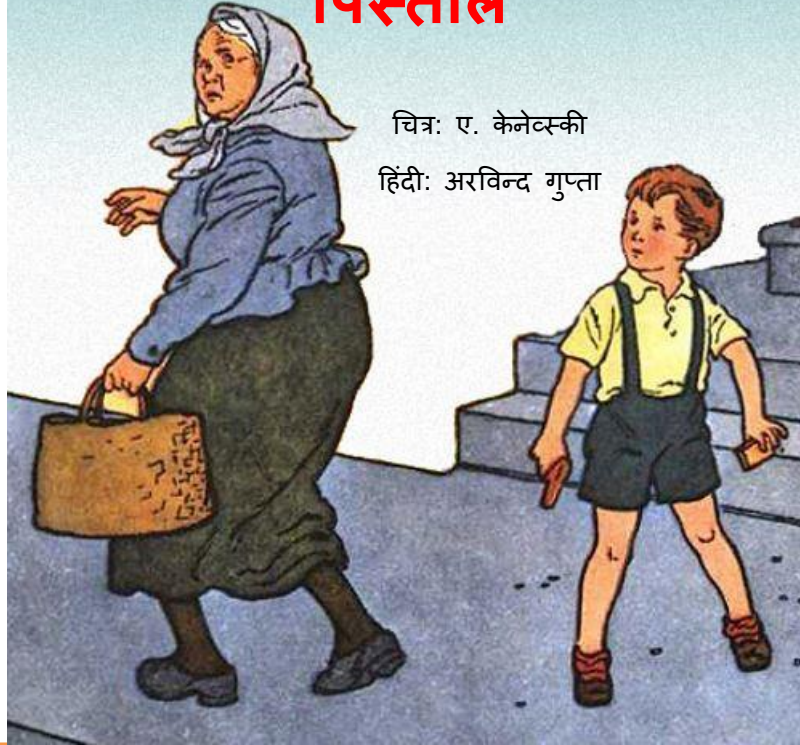
लंबे समय से, साशा अपनी माँ को एक खिलौना पिस्तौल खरीदने के लिए मना रहा था. उस पिस्तौल में से प्लास्टिक-कैप्स की गोली निकलती थीं.

"मैं तुम्हारे लिए उस तरह पिस्तौल नहीं खरीदूंगी," उसकी मां ने कहा, "वो खतरनाक होती है."

"नहीं, ऐसा नहीं है, मम्मी," साशा ने विरोध किया. "अगर उसमें से असली गोलियां निकलती, तो वो खतरनाक होती, लेकिन आप प्लास्टिक-कैप्स से किसी को नहीं मार सकते."

"पर तुम किसी को चोट तो पहुँचा सकते हो या फिर अपनी आँख फोड़ सकते हो."

"नहीं, गोली चलाते समय मैं अपनी आंखें बंद कर लूंगा."

"नहीं. वो मुझे सही नहीं लगता है. उस खिलौना पिस्तौल के साथ कई परेशानियां हैं. वे सुरक्षित नहीं हैं. तुम उस पिस्तौल से किसी को डरा सकते हो," उसकी माँ ने कहा.

और जहां तक उस पिस्तौल का सवाल था, मां उसे नहीं खरीदने वाली थीं.

अब, साशा की दो बड़ी बहनें थीं - मरीना और इरा. फिर वो उनके पास गया और उसने उनसे पिस्तौल की भीख मांगी.

"मैं वो पिस्तौल बेहद चाहता हूँ. यदि आप मेरे लिए वो खरीदेंगी तो फिर आप जो भी कहेंगी वो मैं करूंगा. मैं वादा करता हूँ."

"देखो, साशा," मरीना ने कहा. "तुम बेहद शैतान और धूर्त हो! जब तुम हमसे कुछ चाहते हो तब तुम बड़ी मीठी-मीठी बातें बनाते हो, लेकिन जैसे ही माँ बाहर जाती हैं तुम हमारे लिए कोई बड़ी परेशानी खड़ी करते हो."

"नहीं, मैं अब किसी को परेशान नहीं करूंगा. मैं यह बात बड़ी ईमानदारी से कह रहा हूं. मैं हरेक के साथ अच्छे तरीके से पेश आऊंगा."

"ठीक है," इरा ने कहा. "मरीना और मैं इस पर विचार करेंगे. यदि तुम ईमानदारी से अच्छा बनने का वादा करोगे तो हम तुम्हें वो पिस्तौल खरीद देंगे."

"मैं वादा करता हूँ. मैं सोने के समान अच्छा बना रहूंगा. आप देख सकती हैं!"

अगले दिन साशा की बहनें बाजार गईं और वो उसके लिए एक पिस्तौल और प्लास्टिक-कैप्स का एक पूरा डिब्बा खरीदकर लाईं.

जब साशा ने चमकदार काली पिस्तौल और प्लास्टिक-कैप्स का डिब्बा देखा तो वो खुशी से उछल पड़ा और बड़े उत्साह से वो उन्हें अपने गले लगाते हुए कमरे में चारों ओर दौड़ा.

"ओह, मेरी प्यारी पिस्तौल. मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ!"

उसने हैंडल पर तुरंत अपना नाम खोदकर लिखा और फिर उसने शूटिंग शुरू कर दी. कुछ ही देर में पूरा कमरा नीले धुएँ से भर गया.

"भगवान के लिए वो बंद करो," इरा ने कहा. "हर बार जब पिस्तौल चलती है तो मैं कूदती हूं."

"कायर," साशा ने कहा. "सभी लड़कियाँ डरपोक होती हैं."

मरीना ने कहा, "अगर तुम हमें डरपोक बुलाओगे तो हम तुमसे पिस्तौल छीन लेंगे."

"ठीक है, फिर मैं बाहर जाऊंगा और लड़कों को पिस्तौल से डराऊंगा," साशा ने कहा.

साशा पिछवाड़े में गया लेकिन वहाँ कोई लड़का नहीं था. फिर वो सड़क पर भागा और यहीं से हमारी कहानी वास्तव में शुरू होती है. जैसे ही साशा अपने पिछवाड़े से बाहर निकला, उसने एक बूढ़ी औरत को सड़क पर आते हुए देखा. साशा ने तब तक इंतजार किया जब तक वो औरत उसके काफी करीब नहीं आई और फिर उसने गोली चला दी. बूम! बुढ़िया हल्की सी चीख के साथ उछल पड़ी.

"अच्छा तो वो तुम हो, जिसने गोली चलाई? तुम एक बुरे लड़के हो!"

"वो मैं नहीं था," साशा ने अपनी पीठ के पीछे पिस्तौल छिपाते हुए कहा.

"देखो लड़के, झूठ बोलने से कोई फायदा नहीं होगा. मैंने तुम्हें अभी अपनी आँखों से देखा है. मैं उसके लिए तुम्हारी पुलिस में रिपोर्ट करने जा रही हूं."

महिला ने साशा की ओर अपनी उंगली हिलाई, फिर उसने सड़क पार की और गायब हो गई.

साशा डर गया. "अब मैं क्या करूं? वो महिला पुलिस से मेरी शिकायत करने गयी है."

वो डर से काँपता हुआ घर भागा.

"तुम्हें क्या हुआ है?" हांफते हुए दौड़ते हुए साशा को देखकर इरा ने पूछा.

"तुम ऐसे लग रहे हो जैसे कोई भेड़िया तुम्हारा पीछा कर रहा है. तुमने अब क्या शरारत की?"

"... कुछ भी नहीं!"

"झूठ मत बोलो. मैं देख सकती हूँ कि तुमने कोई शरारत ज़रूर की है."

"मैंने कुछ नहीं किया. बस... पिस्तौल चलाई और वो डर गई."

"कौन डरी?"

"वो बूढ़ी औरत जो सड़क पर चल रही थी."

"तुमने गोली क्यों चलाई?"

"मुझे नहीं पता. मैंने बस उसे आते हुआ देखा और मैंने सोचा कि गोली चलाने में मज़ा आएगा. इसलिए मैंने ट्रिगर खींच दिया."

"उसने क्या कहा?"

"देखो बेटा, मैं तो बुरी तरह से डर गई!" फिर औरत ने मुड़कर साशा को देखा.

"कुछ नहीं. वो मेरी शिकायत करने के लिए पुलिस स्टेशन गई है."

"देखो, तुमने अच्छा व्यवहार करने का वादा किया था और अब देखो तुमने यह क्या कर डाला!"

"मुझे क्या पता था कि वो बूढ़ी औरत इतनी डर जाएगी?"

"तुम रुको, पुलिस ज़रूर तुम्हें खोजती हुई आएगी. वो तुम्हें अच्छा सबक सिखाएगी!"

"पुलिस मुझे कैसे ढूंढेगी? पुलिस को नहीं पता कि मैं कहां रहता हूं. पुलिस तो मेरा नाम तक नहीं जानती है."

"चिंता मत करो. पुलिस तुम्हें ढूंढ निकालेगी. पुलिस सब कुछ पता कर सकती है."

साशा पूरे एक घंटे तक घर पर बैठा रहा. वो हर कुछ मिनटों बाद खिड़की से बाहर देखता था कि क्या कोई पुलिसमैन तो नहीं आ रहा है. लेकिन कोई भी पुलिसमैन नहीं आया. थोड़ी देर बाद साशा थोड़ा शांत हुआ और चमक उठा.

"वो बूढ़ी औरत मुझे बस डराने की कोशिश कर रही होगी."

साशा ने अपनी प्रिय पिस्तौल निकालने के लिए अपनी जेब में हाथ डाला, लेकिन पिस्तौल गायब थी. प्लास्टिक-कैप्स का डिब्बा तो था, पर पिस्तौल गायब थी. उसने दूसरी जेब भी टटोली, लेकिन वो भी खाली थी. उसने पूरे कमरे की तलाशी ली. उसने मेज़ों और सोफ़े के नीचे देखा, लेकिन पिस्तौल का कोई नामो-निशान नहीं मिला. फिर साशा दुखी होकर रोने लगा.

"मैं बस कुछ ही देर उससे खेल पाया," उसने सिसकते हुए कहा, "कितनी प्यारी पिस्तौल थी. और अब वो चली गई."

"शायद तुम उसे बाहर छोड़ आए हो?" इरा ने सुझाव दिया.

"शायद मैंने उसे गेट के पास छोड़ दिया होगा," साशा ने कहा, "मैं अभी जाकर वहां देखता हूं."

वो बाहर सड़क पर भागा, लेकिन पिस्तौल का कोई पता नहीं चला.

"बेशक, किसी ने उसे उठा लिया होगा," उसने सोचा. तभी एक पुलिसमैन दिखा जो सीधे उनके घर की ओर आ रहा था.

"वो मुझे पकड़ने के लिए आ रहा होगा! बुढ़िया ने मेरी शिकायत की होगी," साशा ने सोचा और फिर जितनी जल्दी हो सका वो घर भागा.

"अच्छा, क्या तुम्हें पिस्तौल मिली?" उसकी बहनों ने पूछा.

"श्श!" साशा ने फुसफुसाया. "एक पुलिसमैन आ रहा है."

"एक पुलिसमैन?"

"हाँ, वो सीधे हमारे घर आ रहा है."

"तुमने उसे कहाँ देखा?"

"वहाँ सड़क पर."

मरीना और इरा उस पर हँसे. "तुम थोड़े डरपोक हो! तुमने बाहर एक पुलिसमैन को देखा और डर गए. वो शायद इस ओर बिल्कुल नहीं आ रहा हो."

"मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता अगर पुलिसमैन यहाँ आ भी जाए तो!" साशा ने दृढ़तापूर्वक कहा. "मैं पुलिस से नहीं डरता हूं."

तभी बाहर कदमों की आहट सुनाई दी और दरवाजे की घंटी बजी. मरीना और इरा दरवाज़ा खोलने के लिए दौड़ीं. साशा ने पीछे फुसफुसाया: "उसे अंदर मत आने देना!"

लेकिन मरीना ने पहले ही दरवाज़ा खोल दिया था. निश्चित रूप से, वहां दहलीज पर एक पुलिसमैन खड़ा था. उनकी वर्दी पर लगे पीतल के बटन चमक रहे थे. साशा अपने हाथों और घुटनों के बल झुक गया और सोफे के नीचे जाकर छिप गया.

"क्या यह अपार्टमेंट नंबर 6 है?" साशा ने पुलिसमैन को पूछते हुए सुना.

"नहीं," इरा ने कहा. "यह नंबर 1 है, नंबर 6 बगल वाला घर है. दाहिनी ओर वाला."

"धन्यवाद," पुलिसमैन ने कहा.

साशा ने राहत की एक सांस ली. वो सोफे के नीचे से बाहर निकलने ही वाला था कि पुलिसमैन ने फिर पूछा:

"वैसे, क्या इस फ्लैट में साशा नाम का कोई लड़का रहता है?"

"हाँ," इरा ने कहा.

"हां मैं उसी से मिलना चाहता हूं," पुलिसमैन ने कहा और फिर वो सीधे घर में घुस आया.

जब लड़कियाँ अंदर आईं तो उन्होंने देखा कि साशा गायब हो गया था. मरीना ने सोफे के नीचे झाँका लेकिन साशा ने ज़ोर से अपना सिर हिलाया और उससे “न” कहने का संकेत दिया.

"अच्छा, और वो तुम्हारा साशा कहां है?" पुलिसमैन ने पूछा.

अब तक लड़कियां भी थोड़ी डरी गईं थीं और उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि वे क्या कहें.

अंत में, मरीना ने कहा: "वो...वो अभी घर पर नहीं है. वो...वो खेलने के लिए बाहर गया है."

"आप साशा को किसलिए चाहते हैं?" इरा ने पूछा. "क्या आप उसके बारे में कुछ जानते हैं?“

"मैं उसके बारे में कई बातें जानता हूँ," पुलिसमैन ने कहा. "मुझे पता है कि उसका नाम साशा है. मुझे यह भी पता है कि उसके पास कुछ देर पहले एक बिल्कुल नई खिलौना पिस्तौल थी जो अब उसके पास नहीं है."

"उसे सब कुछ पता है!" साशा ने भयभीत होकर सोचा.
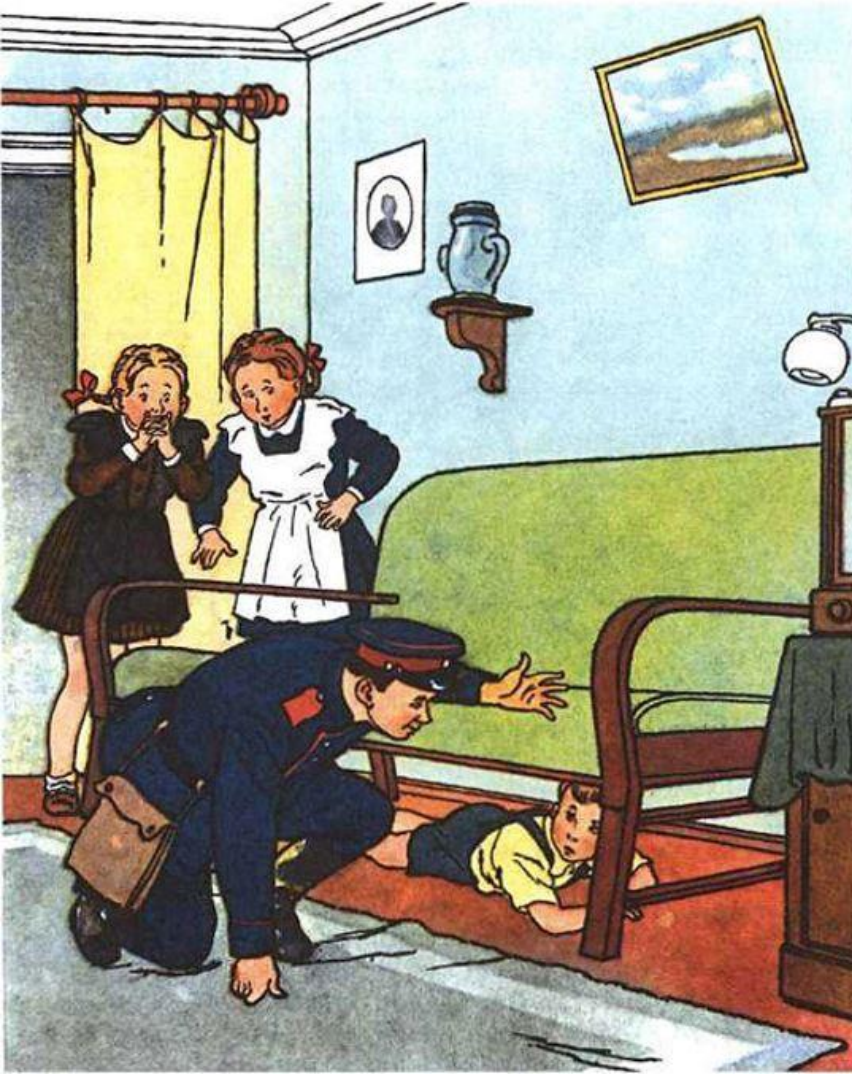
साशा इतना घबरा गया कि उसकी नाक में खुजली होने लगी और इससे पहले कि वह खुद को रोक पाता, उसे एक छींक आ गई.

"वो कौन है?" पुलिसमैन ने आश्चर्य से पूछा.

"वह हमारा कुत्ता है," मरीना ने जल्दी में कहा.

"वो वहां सोफे के नीचे क्या कर रहा है?"

"वो हमेशा उसी सोफे के नीचे सोता है," मरीना ने कहा.

"सच में? और उसका नाम क्या है?"

"उसका नाम... बोबिक है," चुकंदर की तरह लाल होते हुए मरीना ने कहा.

"बोबिक! बोबिक! हेलो, बोबिक!" पुलिसमैन ने बुलाया और सीटी बजाई. "मुझे आश्चर्य है कि वो बाहर क्यों नहीं आ रहा है?" उसने फिर से सीटी बजाई. "वो बाहर आना नहीं चाहता है. बड़ा अजीब कुत्ता हैं. आपने क्या कहा? वो किस नस्ल का है?"

"एर...वो...एर..." मरीना किसी भी कुत्ते की नस्ल का नाम याद नहीं कर पाई. "वो... आप उसे क्या कहते हैं. वो एक बहुत अच्छी नस्ल...,, हाँ, वो एक डोबर्मन पिंसर है."

"वो एक बहुत अच्छी नस्ल है," पुलिसमैन ने व्यापक मुस्कान के साथ कहा. "मैं उस नस्ल को अच्छी तरह से जानता हूं. उनके पूरे चेहरे पर लंबे-लंबे बाल होते हैं."

उसने झुककर सोफ़े के नीचे झाँका. साशा ने उसे घूरकर देखा, उसकी आँखें डर से गोल हो गईं. पुलिसमैन ने फिर से सीटी बजाई, इस बार आश्चर्य के साथ.

"अच्छा तो यह है आपका डोबर्मन पिंसर! अरे, लड़के, तुम सोफे के नीचे क्या कर रहे हो? बाहर आओ. तुम वैसे भी पकड़े गए हो."

"मैं बाहर नहीं आऊंगा," साशा चिल्लाया.

"क्यों नहीं?"

"क्योंकि आप मुझे पुलिस स्टेशन ले जाएंगे."

"किस लिए?"

"उस बूढ़ी औरत के लिए."

"कौन सी बूढ़ी औरत?"

"जिसे मैंने अपनी पिस्तौल से डराया था."

पुलिसमैन ने अपनी भौंहें ऊपर उठाईं. "वो किसके बारे में बात कर रहा है?"

इरा ने बताया, "वो बाहर अपनी पिस्तौल से खेल रहा था और जब उसने गोली चलाई तो एक बूढ़ी औरत वहां से गुजर रही थी और वो पिस्तौल से डर गई."

"फिर यह उसकी ही संपत्ति होनी चाहिए?" पुलिसमैन ने अपनी जेब से एक चमकदार नई पिस्तौल निकालते हुए कहा.

"हां वो पिस्तौल उसकी ही है!" इरा ने कहा. "मरीना और मैंने यह पिस्तौल उसके लिए खरीदी थी और फिर उसने वो पिस्तौल खो दी. आपको वो कहां मिली?"

"आपके घर के पिछवाड़े के गेट के पास. तुम पिस्तौल से बूढ़ी महिलाओं को क्यों डराते हो, लड़के?" पुलिसमैन ने साशा की ओर झुकते हुए कहा. साशा अभी भी सोफे के नीचे छिपा हुआ था.

"मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था."

"तुम सच नहीं कह रहे हो. वो मैं तुम्हारी आँखों में देख सकता हूँ. अगर तुम मुझे सच बताओगे, तो मैं तुम्हारी पिस्तौल वापस दे दूँगा."

"और तब आप मुझे पुलिस स्टेशन नहीं ले जायेंगे?"

"नहीं."

"मेरा इरादा उस बूढ़ी औरत को डराने का नहीं था. मैं केवल यह देखना चाहता था कि वो पिस्तौल से डरेगी या नहीं."

"अब यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं है, लड़के. मुझे वास्तव में तुम्हें इस जुर्म के लिए पुलिस स्टेशन में बंद करना चाहिए, पर चूंकि मैंने वादा किया है, इसलिए मैं वैसा ऐसा नहीं करूंगा. लेकिन अगर मैंने तुम्हें फिर से ऐसा करते हुए पकड़ा तो... अभी आओ, और वहाँ से बाहर निकलो और मैं तुम्हें तुम्हारी पिस्तौल वापिस दे दूँगा."

"नहीं, जब आप चले जायेंगे मैं तभी बाहर निकलूंगा."

"तुम एक बड़े मजाकिया इंसान हो," पुलिसमैन ने हंसते हुए कहा. "ठीक है, मैं जा रहा हूँ."

फिर उसने पिस्तौल मेज पर रख दी और वो बाहर चला गया. मरीना उसे दरवाज़े तक छोड़ने गई. साशा सोफे के नीचे से निकला, उसने अपनी प्यारी पिस्तौल उठाई और उसे अपने गले लगाई.

"हुर्रे, मेरी प्यारी पिस्तौल. तो आखिरकार तुम मेरे पास वापस आ गईं. लेकिन मुझे आश्चर्य है कि पुलिसमैन को मेरा नाम कैसे पता चला?"

इरा ने कहा, ''तुमने अपना नाम पिस्तौल के हैंडल पर खुद लिखा था.''

तभी मरीना वापस आ गई. वो तुरंत साशा पर झपटी.

"शरारती लड़के! जब मैं उन झूठों के बारे में सोचती हूं जो मुझे तुम्हारी वजह से मुझे उस पुलिसमैन से बोलने पड़े तो मैं शर्म से मर जाती हूं. अगली बार तुम जब कभी इस तरह की किसी मुसीबत में पड़ोगे, तो मुझसे यह उम्मीद मत करना कि मैं तुम्हारा बचाव करूंगी."

"अब मैं और किसी झंझट में नहीं पड़ूंगा." साशा ने कहा, "मैं अब कभी किसी को नहीं डराऊंगा."